

DPN 6807

कन्दु शास्त्र KANDU ŚĀSTRĀ

Title :

Run. No. 7532

Cat. No.

Micro. No.

Subject धारणी Dharani

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. / New. / Maith. / New. / New. / Nep. /

Size in cms. 21 x 9

Folios 16

Lines (in a page) 7

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Rajadham Muni Bajracharya

Author / translator

Scribe / donor राजधंमुनि वज्राचार्य / पूर्णकाजी ताम्राकार

Date: NS / SS / VS / KS 971, 978.

Ruler / place थहिति तोल, क्वाथबाहाल Thahiti Tol Kwath bahal.

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : Purna Kaji Tamra Kar

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

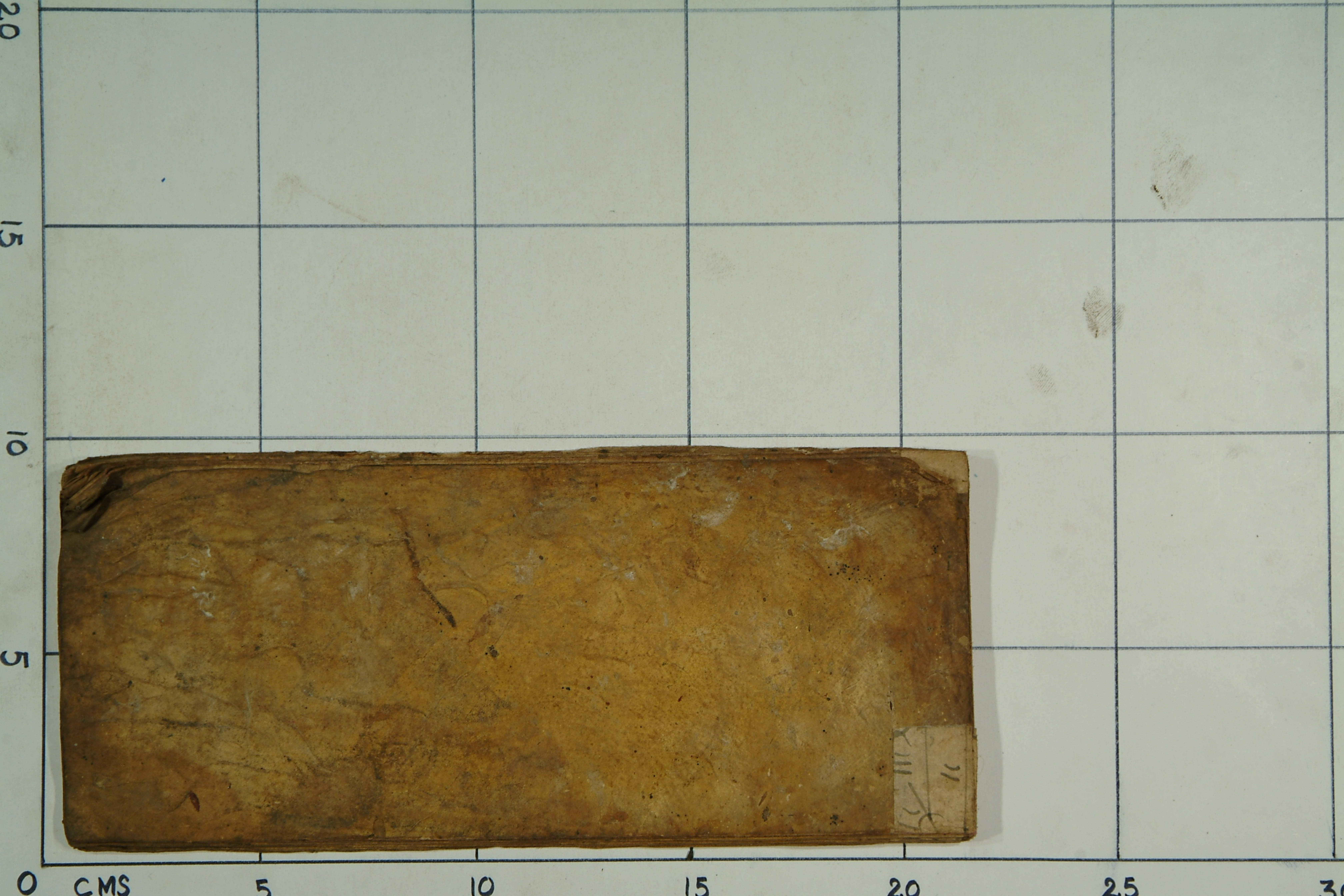
Beginning, colophon, post-colophon :

Beg. ॐ नमो श्री ३ ॐ संतत २ विरत साल महाजव ई ॥ ॐ संगत २ विमलस्कल महाजव ई ॥

P.T.O.

Col. इति कन्दु शास्त्र समाप्तः ॥ ॥ शुभ सम्बत् ५७१ फाल्गुना मास्ये कृष्णपक्षे सप्तम्यां
तिथौ ॥ मूल नक्षत्रे ॥ अतिपात योगे ॥ यथाकर्ण मुहूर्तरे ॥ सोमवारसरे
सवितले मीनराशि सवितले धनुराशिगते चन्द्रमासि ॥ एतद्दिने श्री कन्दु शास्त्र
प्रसक्त सिधयेका दिन जुल्लो ॥ होसक धरिति तोल क्राय बाहालया श्री वज्राचार्य
राजधंमुनिन लिखापिता ॥ ॐ ॥

शुभ संवत् ५७८ मिति दिवागा ४ स श्री ३ स्वयंवू धर्मधातु वागीश्वरसक्य
जोग ध्यात जप याता ॥



0

CMS

5

10

15

20

25

30

१॥ ओं नमो ३॥ ओं संतुल्य शिविन सलमहाजवडू ॥ ओं संतुल्य शिविन सलमहाजवडू ॥ थगुधवार १
 वान चापूरु हाया गुवा कया तसां सहस्रपुष्पमानदपुष्पं ॥ १ ॥ ओं स्मव शिविन सलमः
 हाजमय स्वाहा ॥ धव १ वान सा हाया गुधर्मया तसां विप्रमाधपुष्पं ॥ २ ॥ ओं स्मव शिविन सल
 तमहाजवडू ॥ धव १ वाना या धर्मदान या यदा विप्रमाधपुष्पं ॥ ३ ॥ ओं रल सा रल रिम
 न सवमहाजमू ॥ धव १ वाना ध्यान या तसां विप्रमाधपुष्पं ॥ ४ ॥ ओं धव १ संध
 प्र स्वाहा ॥ धव १ वाना धर्मदान विलसां धूलि उलिधक पुष्प या व्याख्यानमडू ॥ ५ ॥ ओं नमो

सर्वथागत हृदय मृत्गह ॥ ओं कुरु २ गिनि स्वाहा ॥ धव १ वान सा का रिम सहस्र पाप कल्प रुन्मसया
 ना गुजु कर्म पाप दको संपूर्ण भावयिओ ॥ ६ ॥ ओं नमो महावत्त पणवदु आलं काल सर्व रुमिप
 न रुप रंक उरु थागताय ॥ थगुवाना या पुष्प सहस्र वक यति बाजा इय वा ओ रुन्म इय दयिओ ॥ ७ ॥
 ओं नमो वधु मधु ले कुरु धव थागताय ॥ धूलि वाना इया पुष्प न रुत्का वनं सिद्ध इय रुयिओ ॥
 ८ ॥ ओं नमो रग वर संपूर्ण धर्म सवर्धु वधु सृष्टि ला स विवतं दि रुध वर रु स र व बा जा य न
 थागताय ॥ थगुलि वाना या पुष्पं न ॐ रु रुन्म स ॐ रु काल स सम्य कू स वृद्ध इय दयिओ ॥

315

112

ॐ नमो भगवते महा नमो उ विष्णवे नमो तथा गताया ३ हं नमो सर्व्वं वृद्धाय ॥ थलिवा नाया पृथ्वी न
 इगी नमो नमो कायम नमो लिख ॥ १२ ॥ ॐ नमो भगवते धर्मम समुद्र तथा गताया ३ हं नमो सर्व्वं वृ
 द्वाय ॥ धोनाया पृथ्वी नमो उ विष्णवे नमो तथा गताया ३ हं नमो सर्व्वं वृद्धाय ॥ २० ॥ ॐ नमो भग
 वते नमो अय कनका पाणि तथा गताया ३ हं नमो सर्व्वं वृद्धाय ॥ धकधान सा अकाल मृत्यु या गय
 पाय ३ ग ॥ २१ ॥ ॐ नमो भगवते ककुधु जहिय नमो सर्व्वं तथा गताय विहवति ३ हं नमो सर्व्वं
 वृद्धाय ॥ थलिवा नमो सर्व्वं पाय दहि नमो गताया ३ हं नमो सर्व्वं वृद्धाय ॥ २२ ॥ ॐ नमो भगवते प्रजया नमो
 मकडि प्रसादय वरुध नमो सुवी कल्य एड समुद्र मम वगन कल सर्व्वं सिद्धि यय ककु ३ हं ॥ का

मदवा हा वि ३ हं ॥ ३३ ॥ ॐ वज्र को धम हा विह नमो ककु ३ हं ॥ ॐ वल ३ हं ॥ ॐ नमो भगवते
 अकाल मय मा नमो कहन मथ ३ हं ॥ ॐ नमो भगवते ककित म हा कान हय गी वदु ३ हं ॥ ॐ
 ककिलि कि लाय विष्णु वं ३ हं ॥ ॐ गु अ हा नमो ककु गु अ हा नमो ककिलि विष्णु मम या गिनी
 वल ३ हं ॥ ॐ वज्र वध सर्व्वं दृष्ट नमो ३ हं ॥ ॐ सर्व्वं दृष्ट नमो ३ हं ॥ ॐ वज्र म हा गु व सर्व्वं सिद्धि
 ३ हं ॥ ॐ नमो भगवते ककी न वज्र को धम हय गी वदु ३ हं ॥ २४ ॥ ॐ सर्व्वं तथा गत उ विष्णु
 सा नमो सिद्धि हा ॥ ॐ तथा गत उ विष्णु नमो अकाल मय ३ हं ॥ ॐ नमो भगवते गु नमो
 का वलि नमो गाय मरु कि लाय मन्नि पा त काल नमो ककु वम म सु विह नमो या अ वान ॥ ॥ ॐ नमो

[illegible]

三

अहिवद्रां स्ववत् ॥ मं शी अष्टद्वयस मलपा मायनं पंचपापक्षदन इति न कस्य नपनि
 उधालया य रुयिआ ॥ तद्यथा ॥ ओं दी ॥ मं शी प्रकदल थवालं वाल लूमन सा सर्वकार्यसि
 इत्यु ॥ ॥ ओं हूं हा ॥ गुद्व २ विहा ॥ गुद्व ४ अग्नि विनलं गुद्व लं अज्ज्मू ४ स्वाहा ॥ ओं विनलं
 स्वाहा ॥ दं अक मल पंचमहापाप भावन इत्यु ॥ भूगुया प्रलावन इत्यु ॥ ॥ ओं य धर्महि उपला
 वाहु कुं वां त था गत हवद रुपां वथानि गध जवं वादि महाद्यु मद्य ४ ॥ ॥ ओं अग्नि तात प
 अज्ज्मू पना डि न सर्वमहा जा राय २ रुन दूं २ दूं २ रुदू २ स्वाहा ॥ महाप्रतिगिना हृदय इत्यु ॥
 ओं नमव शुक्ल कां धाय इत्यु २ तिष्ठ २ वन्ध २ रुन २ अग्नि त दूं रुदू ॥ वज्रया गिनी धालदी

॥ ॥ ओं तालु काल मम आ पू पृथ हान प्रीतिं कुरु स्वाहा ॥ ॥ सफावनी ताशाना मधाय
 दी ॥ ॥ ओं नमः सर्वतथागत अवला किं ओं सं रुव २ धक सां धा धी ना पूजा या त सां पू पृथया
 व्याख्यान मद् ॥ ॥ नमो रुगवत्पुत्र मान प्रमर्दन तथा गताया इति सम्यक् वृद्धाया ॥ तद्य
 था ॥ ओं वज्र २ महावज्र २ वज्र महा विशावज्र महागधिविल्वज्र महागधिस रक्षा पसंक्रमन
 वज्र सर्वकर्म आवयद्य विवधानि वज्र स्वाहा ॥ धाल किं दी ना पूजा या त सां पूजा थ लिखक स
 लम मद् ॥ ॥ ओं नमः समस्त वृक्षानां अ समपद धर्म धा उ कार्य गतिं गतानां ॥ सर्वथा सुखं
 अज्ज्मू सं स हूं हूं २ वं २ वं २ स्वाहा ॥ वं स्वाहा ॥ हूं स्वाहा ॥ शुभक वेशी वत रुदु ॥ ॥

20

15

10

5

0

CMS

5

10

15

20

2.5

30



चतुर्धक दं हृदयाहा ॥ सूर्ययामनु ॥ ओं वरुधर्मसमयस्त्वं इन्द्र ॥ अवलीनिकरुदृत्वाहा ॥
 ओं हं ३ हि ३ प्रसाधक हृदयाहा ॥ ओं इं हं चहा ॥ ओं इं हं चहा ॥ ओं आ ३ ह्रीं इं इं ॥ ओं वृद्धज
 किनी अफी ३ इं ॥ ओं ह्रीं ३ ह्रीं विकृतानन इं ३ हृद ॥ स्वाहा ॥ अहं स समा ॥ ओं गवरवं किनखं
 विमनस उहूनकाधम इं हृद ॥ हवति ॥ हृदयनिवमं इहोयाकि प्रकवीय ॥ ओं पभातृ
 भायगातृ स इमिमातृ निगातृ हृदयवज्रकस उव हृद हृदयाहा ॥ अकसमववहीदवसम
 यक इं हृद ॥ ६६ तिसिहमतिजिकि ॥ ओं आ इं विव उल २ मृगसहिमिह्रीवज्रजिसदवद
 मनषलांग ॥ त्सर्वयात्रय इं हृद ॥ एक हृदया मइ न इं इं इं इं किकालया हृदय ॥

लक्ष्मीहृदयसहितविरुयानाडा प्रिवत्तयासंबनतयागसाहानवज्जुग्निवज्ज समान
 रुनगथाजावावदलिसमिगुलिहृत्तथाधर्मनपापरुसमयांनाडाव्यरुलमहागुव
 पयसंरुवनिधिदिगमगुफनसाधनयास्यतअलधर्मध्वगुवूनरुक्तिगोवनीयो
 आपिकास्यंतयाहृल॥ ॥नमोरागावधवंगवनअमलाकिलनवाजाय तथागतया
 हृत्तसम्यकसंबुद्धाय॥ ॥नमोसमूद्रद्वधाधिसत्त्वयमहासत्त्वा॥ तथा॥ ॥ ॐ पंचि
 धियमृवधाधनिस्वाहा॥ धानगवानाडाहायागुपाथयागसांनलकदिप्रमाधापूध
 इहृल॥ ॥नमस्मिन्नलज्जयाय॥ प्रिवत्तयाप्रखवनजिनहृलसांअमूलवत्तमहा

मूनिजिनवायधनधन्यशक्तिकर्मधर्मवद्वजिनसिलप्रिवत्तवृद्धधाधिसत्त्वयामहा
 पूषनसर्वसंपूर्णजिनखनवूनधर्मधाउमनजिहृलआकाशाहागताशनसाधमनु
 यासिद्धिहृलमावकमहृदवमिषनाआसिषहास्यविश्वकहृलधकधर्मवजधनरुत्त
 लसुमिनिधनाधलक्ष्मीकाकिहृमंडहीसमूडनामगुवूनसपनसधुगुलिपूक्त
 कदहनिलानाधकआहाहृस्यविश्वकहृलधुगुधर्मनिसिर्सालहृदिहृउपड
 व्याधिनागभावनहृयमाधर्मपुतापयमा ॐतिवृद्धदेण॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ति
 कदसासुसमाफ॥ ॥ ॐ सम्वत् २०१ हात्तुधमाभ्यक्तपदसफसांदिथो ॥

मूलनदो॥ व्यापारकयाग॥ यथाकर्तुमुदरुव॥ सामवावहायसविकलधमिनवासि
सविकलधनूवादिगुरुवन्दुमसि॥ नरस्मिन्दिनदीकन्दुसासुपुस्तकसिधयकादिनरुला
॥ ७ ॥ लखकथहिमिनालकाथवाहालयादीवशावायवाजुधमूनिनलिवापिना
॥ ७ ॥

१॥ सवत् २१८॥ नदिनाठमठसशी३ स्वयंवृधर्मधामुवाशि
स्वजसकः शीठाधमनजययानाः ध्वलं कोपानापीपाठ
वायथगुजर्मयानागुपापजाठायाधिः कस्तुजागना
सवानावेआवमपीहनीलिथगुजर्मयानागु
पापलकाविष्णुसमागुठठाकः सैसाजसः सत्वयानि५
धर्मरूपमोपीधर्मसुलोकसुखसंपानिः पत्रजाकस
सुखावगिवासलाननापीशलः सुहमगल्लहसुसवजगता

गंगा साजी चरु चकारा चिकं म् २ अ कय का लाः थ
मि जगत् सा गव स्वथ जोग कुरु लो ग ना स
सा चो चिकं ना प ग य पा ख ठा क दा य क सा ण श ल थ

विधि सिज को ला १
वृद्ध को ला १ पा ला
को ला सु क र को ला १

विधि को ला १
वि ले सि क को ला १
नि रु ला को ला ३
क सो व ला न अ ठ
कि मि ला स

क न को ला १
पा ला को ला १ नि र व या गा ला २
सा धे ल को ला २ सि का को ला १

सि वि नि वा
ध क ला कु व ला १
चिकं २ को ला १
सा र य के ठा स व स ग या हि ध सा

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

हनुमन्ति नमः २

नमो भगवते वासुदेवाय ३

नमः २

नमो भगवते वासुदेवाय १

साधना नमो भगवते वासुदेवाय ४॥

अथ वारि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥